International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-02-2026, Accepted: 28-03-2026, Published: 11-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 48-49

नव संवत्सर, रामनवमी एवं हनुमान जयंती का समकालीन महत्व: भारतीय परंपरा और आधुनिक संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. ए. के. द्विवेदी
प्रांत संयोजक, मालवा प्रांत, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, भारत

सारांश
यह शोध–पत्र श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास 'बिस्रामपुर का संत' में ग्राम्य जीवन की विडम्बनाओं, सत्ता–संरचना की जटिलताओं और संतत्व की पारंपरिक अवधारणाओं पर गहन प्रहार करता है। इस कृति में स्पष्ट किया गया है कि जब संतत्व का आदर्श सत्ता–लिप्सा और स्वार्थपरक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो जाता है, तब वह लोकमंगल का साधन न रहकर शोषण, पाखंड और अवसरवादिता का उपकरण बन जाता है। लेखक ने तीखे व्यंग्य के माध्यम से यह उद्घाटित किया है कि धर्म और राजनीति का गठजोड़ किस प्रकार समाज को नियंत्रित करने तथा जनता को भ्रमित करने का हथियार बन सकता है।
यह उपन्यास केवल एक साहित्यिक रचना भर नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ का जीवंत चित्रण है, जो पाठक को धर्म–सत्ता की विडम्बनाओं और लोकतांत्रिक व्यवस्था की जटिलताओं पर पुनर्विचार करने को प्रेरित करता है। इस दृष्टि से 'बिस्रामपुर का संत' हिन्दी साहित्य में व्यंग्य–परंपरा की अनमोल धरोहर है, साथ ही यह सामाजिक–राजनीतिक विमर्श का भी एक सशक्त और विचारोत्तेजक दस्तावेज़ सिद्ध होता है।

मूल शब्दः नव संवत्सर, रामनवमी, हनुमान जयंती, भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्य, सामाजिक समरसता

भारत विविधताओं का देश होते हुए भी अपनी सांस्कृतिक एकता के लिए विश्वभर में विख्यात है। यहाँ के पर्व–त्योहार केवल उत्सव नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला के मार्गदर्शक हैं। नव संवत्सर, रामनवमी एवं हनुमान जयंती ऐसे ही प्रमुख पर्व हैं, जो भारतीय समाज को आध्यात्मिक ऊर्जा एवं नैतिक दिशा प्रदान करते हैं।
आज के भौतिकतावादी युग में, जब मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है, इन पर्वों का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

नव संवत्सर (हिंदू नववर्ष) का महत्व

भारतीय पंचांग के अनुसार चौत्र शुक्ल प्रतिपदा से नव संवत्सर का आरंभ होता है। इसे सृष्टि के आरंभ का दिन भी माना जाता है।

ऐतिहासिक एवं पौराणिक आधार

- ब्रह्मा जी द्वारा सृष्टि रचना का प्रारंभ इसी दिन माना जाता है।
- विक्रम संवत का प्रारंभ भी इसी कालखंड से संबंधित है।
- सांस्कृतिक महत्व:
- यह दिन नवीन ऊर्जा, संकल्प और आत्मचिंतन का प्रतीक है।
- भारतीय समाज में इसे उत्साह, स्वच्छता, और नव आरंभ के रूप में मनाया जाता है।
- आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता:
- जीवन में सकारात्मक परिवर्तन और लक्ष्य निर्धारण का अवसर।
- पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय पंचांग की वैज्ञानिकता को समझने का माध्यम।

रामनवमी का महत्व

रामनवमी भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में मनाई जाती है, जो मर्यादा, धर्म और आदर्श शासन के प्रतीक हैं।
राम नवमी हिंदू धर्म के सभी अनुयायियों के लिए बहुआयामी महत्व रखती है। यह बुराई पर अच्छाई की विजय और असत्य पर सत्य की जीत का प्रतीक है। इस दिन उपवास, प्रार्थना और पवित्र ग्रंथों का पाठ किया जाता है, ताकि आध्यात्मिक विकास और आंतरिक परिवर्तन के लिए ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हो सके।
नैतिक दृष्टि से, राम प्रतिज्ञा पालन, संकट में स्पष्टता और विजय में विनम्रता का आदर्श उदाहरण हैं। वनवास, किष्किंधा में गठबंधन निर्माण और लंका में न्यायनिर्णय अनिश्चितता के बीच निर्णय लेने के जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। विभिन्न क्षेत्रों के नेता नैतिक साहस, सहानुभूतिपूर्ण अधिकार और स्वार्थ पर कर्तव्य की प्रधानता पर चिंतन करने के लिए नियमित रूप से इन घटनाओं का सहारा लेते हैं।
राम नवमी का ऐतिहासिक महत्व प्राचीन काल से जुड़ा है। ऋषि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण मात्र एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक दस्तावेज भी है जो प्राचीन भारत के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य की झलक प्रस्तुत करता है। भगवान राम के जीवन की कथा उस युग में प्रचलित राजत्व, शासन और सामाजिक नैतिकता के आदर्शों को दर्शाती है।

श्रीराम का जीवन–दर्शन

- सत्य, कर्तव्य और त्याग का सर्वोच्च उदाहरण।
- परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व का आदर्श मॉडल।

प्रतिनिधि छवियाँ

सामाजिक एवं राजनीतिक महत्व

- "रामराज्य" की संकल्पना आज भी सुशासन का आदर्श मानी जाती है।
- न्याय, समानता और पारदर्शिता के सिद्धांतों को स्थापित करती है।

वर्तमान समय में महत्व

- नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण में अत्यंत उपयोगी।
- पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक संतुलन को सुदृढ़ करने का माध्यम।

हनुमान जयंती का महत्व

हनुमान जयंती भगवान हनुमान के जन्मोत्सव के रूप में मनाई जाती है, जो शक्ति, भक्ति और सेवा के प्रतीक हैं।

हनुमान जी के गुण

- अटूट भक्ति एवं समर्पण
- अद्वितीय बल एवं साहस
- विनम्रता और सेवा भावना

आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक महत्व

- भय, तनाव एवं नकारात्मकता से मुक्ति का मार्ग।
- आत्मविश्वास एवं मानसिक दृढ़ता का विकास।
- आधुनिक जीवन में प्रासंगिकता
- युवाओं को अनुशासन, समर्पण और राष्ट्रसेवा की प्रेरणा।
- मानसिक स्वास्थ्य और सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत।

भारतीय परंपरा और आधुनिकता का समन्वय

इन तीनों पर्वों का मूल उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन के समग्र विकास का मार्गदर्शन है।

- **नव संवत्सर:** आत्मनवीकरण और लक्ष्य निर्धारण
- **रामनवमी:** आदर्श जीवन एवं नैतिकता
- **हनुमान जयंती:** शक्ति, सेवा और समर्पण

आज आवश्यकता है कि हम इन पर्वों को केवल उत्सव के रूप में न मनाकर उनके मूल संदेशों को जीवन में उतारें।

समकालीन महत्व: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण

ये त्यौहार हिंदू समाज में एकता और सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करते हैं, जो आधुनिक समय में अपनी जड़ों को समझने के लिए आवश्यक है।

मानसिक स्वास्थ्य और सकारात्मकता

इन त्यौहारों के अवसर पर की जाने वाली पूजा, कीर्तन और मंत्रोच्चार से मानसिक शांति और सकारात्मकता का संचार होता है, जो तनावपूर्ण जीवनशैली में महत्वपूर्ण है।

गौरवशाली इतिहास से जुड़ाव

विक्रम संवत के माध्यम से, ये त्यौहार हमें भारतीय गौरवशाली इतिहास और खगोलीय ज्ञान की याद दिलाते हैं।

निष्कर्ष

नव संवत्सर, रामनवमी एवं हनुमान जयंती भारतीय संस्कृति के ऐसे स्तंभ हैं, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आधुनिक युग में इनका महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि ये हमें नैतिकता, अनुशासन, और सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

यदि इन पर्वों के मूल संदेशों को व्यवहार में लाया जाए, तो एक सशक्त, समृद्ध और संस्कारित भारत का निर्माण संभव है।

जीवनी

डॉ. ए. के. द्विवेदी, बीएचएमएस (स्वर्ण पदक विजेता), एमडी, एमबीए, पी.एच.डी., 25 वर्षों से अधिक समय से पंजीकृत होम्योपैथ हैं। वे एस.के.आर.पी. गुजराती होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, इंदौर में शरीर क्रिया विज्ञान विभाग के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष हैं। वे देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत की कार्यकारी परिषद के सदस्य हैं। वे आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड (सीसीआरएच) के सदस्य, शिलांग मेघालय, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार की वैज्ञानिक सलाहकार समिति (एनईएएच) के सदस्य, मध्य प्रदेश चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश (भारत) के अकादमिक बोर्ड के सदस्य हैं। वे एडवांस्ड होमियो हेल्थ सेंटर एंड होम्योपैथिक मेडिकल रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत के निदेशक और सीईओ हैं और "सेहत एवं सूरत" (हिंदी मासिक चिकित्सा पत्रिका) के संपादक हैं।

संदर्भ सूची

1. वाल्मीकि रामायण
2. रामचरितमानस
3. हनुमान चालीसा
4. शर्मा, रामानंद (2015). भारतीय संस्कृति का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. मिश्रा, एस. के. (2018). भारतीय पर्व और परंपराएं. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।
6. सिंह, आर. पी. (2020). Indian Cultural Heritage. New Delhi: Oxford Publications.
7. Government of India (Ministry of Culture). (2022). Festivals of India.
8. NCERT (शैक्षिक सामग्री एवं सांस्कृतिक अध्ययन)